आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी -
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
छायाचित्र-सदाविजय आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	भाषाई प्रेम-द्वेष के बहाने	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	९
आंतर भारती - २	महात्मा बसवेश्वर वचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
श्रद्धांजली	एकनाथ ठाकुर का निधन	१२
समाचार भारती -१	भारत की संतान	१२
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१३
विशेष आलेख - १	अंग्रेजी भाषा की दासता कब तक	१४
विशेष आलेख - २	धुनी तरुणाई	१७
समाचार भारती -२	पुरस्कार वितरण समारोह	१९
विशेष आलेख -३	झुंडशाही की प्रजातंत्र की पीठ पर बैठ	२१
संस्था परिचय	असल - जैविक आहार तथा नैसर्गिक उपज भंडार	२४
समाचार भारती -३	श्वसुर ने किया बहू का कन्यादान	२३
समाचार भारती -४	शोलापुर जिल्हा : साने गुरुजी कथामाला शोलापुर (महा.) का वार्षिक विवरण २०१३-१४	२८
समाचार भारती -५	आंतर भारती, अंबाजोगाई - अंबाजोगाई में रहनेवाले अन्य भाषिकों से संवाद	२९
समाचार भारती -६	मोगा (पंजाब) के ईंट भट्टे से रिहा कराये २५ दलित बंधुआ मजदूर	३१
काव्य भारती - २	कोई बोलता क्यों नहीं	३३

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

भाषाई प्रेम-द्वेष के बहाने

''तुलसी मोठे वचन ले...'' वचन मोठे हो तो बोलने और सुननेवालों के चारों तरफ आत्मीयता का माहौल फैल जाता है. वह कोई भी भाषा में क्यों न हो. हाँ, वह वचन यदि सुननेवालों की अपनी भाषा में हो तो प्रीति और बढ जाती है. बोली मीठी भी... स्वादिष्ट भी... !

भारत की संपन्नता की द्योतक उसकी भाषाई बहुलता और विविधता भी है. भले ही भाषा - वैज्ञानिक यहाँ की भाषाओं को कहीं दो तीन परिवारों में बांटकर समान स्रोतों से उपजी भाषाओं के रूप में इनके बीच संबंधों के दायरे स्थापित करते है. मगर जीवन की सच्चाई यही है कि भाषा कोई भी हो, मगर भावना में प्यार की मांग हर कहीं होती है. भावना में अपनत्व का बल कुछ हद तक सुननेवाले की भाषाई समझ पर भी निर्भर करता है. उसकी अपनी भाषा में यदि हम कहें निश्चय ही वह बात उसके मन के अंतस को छू पाने में सक्षम हो जाती है.

भाषाएं भावनाओं के आदान-प्रदान में जो भूमिका अदा कर रही हैं वही उनकी समझ के आधार पर बोलने और सुननेवाले के बीच अपनत्व की भावना को सुदृढ कर देती है.

'आंतर भारती' के लिए संपादकीय की ये पंक्तियों में उस समय लिख रहा हूँ. जिस दिन भारत सरकार की सर्वोच्च सेवाओं के लिए हर वर्ष संपन्न होनेवाली सिविल सेवा आरंभिक परीक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यतावाले सवालों के जवाब देने की छूट की घोषणा अखबारों में लगातार छपकर परीक्षा आयोजित हो रही है. सिविल सेवाओं में भर्ती के लिए अंग्रेजी ज्ञान की अनिवार्यता वाले प्रश्न विगत वर्षों में जुड गए थे, तब जो भी विरोधी आवाजें उठीं, उन्हें नज़रंदाज की गई. इस बार यह मुद्दा व्यापक जनांदोलन का रूप लेते क्षण नई सरकार ने आंदोलनकारियों के दावे के पक्ष में निर्णय लिया है. परिणामतः संघ लोक सेवा आयोग ने यह घोषणा की है कि इस वर्ष अंग्रेजी बोध के उन सवालों के जवाब देने की जरूरत नहीं है. जिनका हिंदी अनुवाद प्रश्नपत्र में शामिल नहीं किया गया हो. इसे हम हरगिज यह नहीं कह सकते हैं कि यह अंग्रेजी के विरुद्ध जनआंदोन का परिणाम है. इसके पीछे कई राज है.

भाषाई साम्राज्यवाद के सफल उदाहरण के रूप में अंग्रेजी दुनिया में पनप रही

है और हल पल, हर तरफ बढ रही है. उसके फैलाव के राज को समझकर हर कोई अपने लाडलों को अंग्रेजी माध्यम माध्यम के स्कूलों में भर्ती करवाने के परिणामस्वरूप आज हिंदी व अन्य भाषा माध्यमों के लिए भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बडा खतरा पैदा होकर वह बढता ही जा रहा है. उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में तो भारतीय भाषाएँ लगभग अछूते है. मुट्ठीभर नीति-निर्णायकों के निर्णयों का बुरा अवसर जनता पर आसानी से पड रहा है और दूसरी और बढती डिजिटल-संस्कृति की वजह फिर से रोमन और अंग्रेजीयत की और जबर्दस्त हम आकर्षित हो पडे हैं. अंग्रेजी के लिए भारत आज बडा मार्केट है ही, दुनिया भी तो बनती जा रही है. अंग्रेजी शिक्षा का यह तो परिणाम निकले के सभी छात्र अंग्रेजी में पर्याप्त पकड हासिल कर पाएं, मगर दुर्भाग्य से यह भी सुसाध्य नहीं लग रहा है. अंग्रेजी के बढते प्रभाव के आलोक में हमारी अपनी बोलियां के अस्तित्व को लेकर चंद भाषा-प्रेमियों की चिंताएँ अंग्रेजी के विरुद्ध आक्रोषपूर्ण वचनों रूप में व्यक्त हो रहती है.

संघ लोक सेवा आयोग की भर्ती परीक्षाओं में भाषा नीति को लेकर कई वर्षों तक दिल्ली में आयोग के परिसर के सामने आंदोलनकारियों के पंडाल लगे हुए थे जिसमें देश के कई दिग्गज नेता भी शामिल हो गए थे आंदोलन के समर्थन में. मगर किसी भी भाषा के अस्तित्व व प्रचलन का श्रेय, उसके द्वारा अस्तित्व की चिंता उस भाषा के फैले हुए साम्राज्य ही निश्चित करता है. यहाँ 'साम्राज्य' शब्द का प्रयोग मैं उसी दृष्टि कर रहा हूँ जो व्यापक हो और प्रबल भी हो. हिंदी के 'साम्राज्य' के विरोध में हिंदीतर प्रदेशों में चंद राजनेताओं की अक्कर भडकाऊ टिप्पणियों से एक ऐसी धारणा फैल चुकी है कि हिंदीतर प्रदेश 'हिंदी विरोधी प्रदेश' हैं. वास्तविकता उससे भिन्न है. विगत दिनों में संस्कृत सप्ताह के आयोजन के संबंध में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के आदेश को लेकर भी गर्मजोशी फैली गई थी तमिलनाडु में उसके आयोजन के विरोध में. आश्चर्य इस बात का है कि उसी तमिल में हिंदी की बहुत बडी मांग है, हिंदी प्रदेश के कोई भी वहाँ हिंदी पढाकर भी अपना पेट भर सकता है. शहरों में तो हर गली में 'स्पोकन हिंदी' के बोर्ड दर्शन देते है.

डिजिटल दुनिया में भी व्यापारिक दृष्टि से ही सही बहु-राष्ट्रीय कंपनियों की रणनीति में कई प्रचलित भारतीय भाषाएँ जुड जाने की वजह से उनका डिजिटल अस्तित्व संभव हो पा रहा है. शासन की नीति भाषा के अस्तित्व के लिए किसी हद तक पोषक तत्व का काम कर सकता है. भारत के बडे भूभाग में जिला स्तर के न्यायालयों की कार्यवाही में कहीं वहाँ की प्रचलित भाषाओं में काम हो रहा है मगर उच्च व उच्चतम न्यायालय अंग्रेजी में ही अपने निर्णय देने

की इच्छा जताते हुए इस संबंध में उनके अनुकूल संवैधानिक प्रावधान का फायदा भी भरपूर उठा रहे हैं. न्याय के वे तमाम फैसले अंग्रेजों के लिए नहीं हैं, वे सब इस देश की भाषाओं को बोलते हुए पलने वाले जन के लिए ही हैं. संवैधानिक प्रावधानों के बहाने न्यायालय अंग्रेजी प्रेम को नहीं छोड पा रहे हैं. कुछ हिंदी प्रदेश के उच्च न्यायालयों में हिंदी का प्रवेश हो पाया है, मगर तमिलनाडु के उच्च न्यायालय की कार्यवाही तमिल में करने की अनुमति की मांग भारत के राष्ट्रपति महोदय के पास वर्षों से लंबित है.

यद्यपि सिविल सेवा परीक्षा में सफल होकर देश के किसी राज्य में तैनात होकर 'अधिकारी' बननेवालों से तो किसी अंग्रेजी देश की या अंग्रेजी भाषी जनता की सेवा करने की अपेक्षा तो नहीं है, तथापि संघ सरकारी की घोषित राजभाषा हिंदी भी है. सरकारी अधिकारियों के अंग्रेजी ज्ञान से उस तरह के दमन की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए जैसे अंग्रेजों ने भारतवासियों का दमन किया था, अन्यथा प्रेम से सेवा के लिए तो सेवा पाने वालों की भाषा की ज्यादा सक्षम होती है. यह तो बात रही प्रशासकों के लिए अंग्रेजी ज्ञान के अनिवार्यता पर बल की. दुर्भाग्य से दूसरी तरफ अन्य रूपों में भारतीय समाज की सेवा करनेवाले उन कुशल व्यावसायिकों के लिए भी अंग्रेजी माध्यम से ही शिक्षा मिल रही है. भारत के विश्वविद्यालयों में विज्ञान, चिकित्सा, अभियांत्रिकी समाज विज्ञान, मानविकी आदि विषयों की शिक्षा पानेवाले किसी लंदन में जाकर अपने जीवन यापन नहीं करने वाले हैं, ऐसे में उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी की अनिवार्यता हास्यास्पद है. भारतीय भाषा माध्यमों में हजारों वर्षों पूर्व इन तमाम ज्ञान के क्षेत्रों के संबंध में सहस्रों पृष्ठों का ज्ञान लदा पडा था, मगर हमारे विश्वविद्यालय इस तथ्य को भूलने में तुले हुए नजर आते हैं. सैकडों वर्ग कि.मी. की जमीन को घेर कर करोडों के खर्च दिखानेवाले भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थानों के उपाधिदारी भी आखिर भारत के ही जनवासों में अपनी रोजी-रोटी कमाते हुए जीते रहेंगे तो उन्हें अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा क्यों अनिवार्य हो. इतने बडे पैमाने में खर्च करके हम अपने केवल लगभग बीस प्रतिशत लाडलों को कोई भूमिका है, दुर्भाग्य से इस और पढे लिखे अधिकारी वर्ग की कोई चिंता या चिंतन नहीं है, विश्वविद्यालय शासन बननेवाले आचार्यवर्ग भी उन्हीं 'अधिकारी भावनाओं' से ग्रस्त हो रहे हैं. भारतीय भाषा माध्यमों से उच्चतर शिक्षा का फैलाव सुनिश्चित हो जाने पर विश्वविद्यालयों के अस्तित्व की सार्थकता भी बढती जाएगी, मगर इस ओर नीति निर्णायकों का ध्यान नहीं जा रहा है.

सौभाग्य से इस बीच भारतीय राजनयिक नीति में एक कदम हिंदी के माध्यम

से बढ रहा है, प्रधान मंत्री मोदी को इसका श्रेय जाता है. वे देश में ही नहीं विदेशों में ही नहीं विदेशों में अपनी यात्राओं में, विदेशी प्रमुखों के साथ वार्ताओं के दौरान हिंदी को अपनाकर भारतीय भाषा माध्यम की क्षमता की जान फूँक रहे हैं.

वास्तव में किसी भी भाषा-ज्ञान से हमें परहेज नहीं होना चाहिए. अंग्रेजी भाषाई ज्ञान भी इस ढंग से फैलाया जाए कि इसके परिनिष्ठित प्रयोगकर्ताओं के रूप में पढनेवाले उभर सकें. भाषाएं चिंतन को विकसित करने के साधन के रूप में हमें काम आएं तो उनका फायदा है. मगर दुर्भाग्य से भाषा प्रेम-द्वेषों के बहानों से ये चिंतन के माध्यम से भी ज्यादा विवाद के मुद्दे बने रही हैं. एक हकीकत यह भी है कि विदेशी विद्वानों ने ही भारतीय भाषाओं के साहित्य के इतिहास को अक्षरबद्ध करने का पहली बार प्रयास किया था, भारतीय भाषाओं के व्याकरण अंग्रेजी में अक्षरबद्ध करने और शब्दकोशों के निर्माण का कार्य भी किया था. देश के अंग्रेजी माध्यम पाठशालाओं की संख्या बढाने की जगह, भारतीय भाषा माध्यम के स्कूलों को ही बढाकर उनमें एक भाषा के रूप में पूरी निष्ठा से प्रभावपूर्ण ढंग से अंग्रेजी का भी शिक्षण हो जो कि वैश्विक धारातल पर हमें संपर्क के माध्यम के रूप में काम आ जाए.

भारतीय विश्वविद्यालयों के स्वायत्त स्वरूप से बडी संभावना है कि कहीं मुट्ठीभर विश्वविद्यालय भी यदि भारतीय भाषा माध्यमों से उच्चतर शिक्षा प्रदान करने का संकल्प करें तो उच्चतर शिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रचलन व विकास की दिशा में सफलता हासिल हो सकती है. आशा है, उच्चतर शिक्षा संस्थाओं में भाषा माध्यम के रूप में भारतीय भाषा माध्यमों के प्रवेश से निश्चय ही भारतीय भाषाओं में ज्ञान प्रसार का मार्केट बढ़ेगा. अधिकाधिक लाड़लों को हम उच्चतर शिक्षा का सौभाग्य दे सकते हैं. मीठी भाषाओं से मीठे वचनों का स्वाद बढाने में सफल होने के लिए, ज्ञान व कुशलता की गरिमा बढाने के लिए दृढ संकल्प लेने हेतु भारत की भाषा नीति की पुनः समीक्षा की बडी ज़रूरत है.

हिंदी को राजकाज की भाषा के रूप में स्थापित करने में प्राप्त सफलता की जाँच से बढकर भारतीय भाषा माध्यमों से शिक्षा का प्रसार हो तो हिंदी अपने आप बढेगी. भारत की अपनी भाषाओं को बचाने की कोशिश ईमानदारी से हो तो उनकी प्रयोगनिष्ठा व प्रचलन बढ सकता है. तब जाकर ''चारों ओर सुख उपजने'' में ये भाषाएँ अपनी भूमिका अदा कर सकती हैं.

- डॉ.सी.जयशंकर बाबु

तुकाम्हणे

देहीं असोनियां देव

देही असोनिया देव । वृथा फिरतो निर्दैव ।।धृ।।
देव आहे अंतर्यामी । व्यर्थ हिंडे तीर्थग्रामी ।।१।।
नाभी मृगाचे कस्तुरी । व्यर्थ हिंडे वनांतरी ।।२।।
साखरेचें मूळ ऊंस । तैसा देहीं देव दिसे ।।३।।
दुधीं असतां नवनीत । नेणे तयाचे मथित ।।४।।
तुका सांगे मूढजना । देहीं देव कां पाहाना ।।५।।

English Translation

Do not go about denying existence of God
Dehin asoniyaa devaa vrithaa firato nirdaiva

Do not go about denying the existence of God,
As He is in your very body.
Hence do not wander around places of pilgrimage,
In search of God.
Know that the deer runs all over the forest in search of the Musk,
the source and the scent,
While it lodges within its own body.

God is the essence of the living body,
Just as sugar is the essence of sugarcane.
Milk contains cream and people do not know it.
Says TUKA, fools think that the body is God.

(Tuka says the ignorant to seek
God present in the body - Editor)

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

माडि माडि केट्टरू मनविल्लदे
नीडि नीडि केट्टरू निजविल्लदे
माडुव नीडुव गुणवुळ्ळवरे
कूडिकोंड नम्म कूडलसंगम देव

हिन्दी काव्यानुवाद :

बेमन से दान कर के बिगड़े दानी
बिना समझे देने वाचे बिगड़े
समझ बूझकर दान करनेवाले हे
हमारे कूडल संगम देव

सारांश : दानी वो है जिस में अहंकार ना हो. देनेवाला मैं हूँ का भाव उसमें न आये. एक हाथ से दिया हुआ दान दूसरे हाथ को मालूम नहीं होना चाहिए अर्थात् 'तेरा तुझ को सौंपना क्या लागे मोर' का भाव देनेवाले के मन में होना चाहिए.

प्रा.डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापुर रस्ता, सोलापुर-४१३००४
फोन ०२१७-२३४२१९४ मो. ०९३७१०९९५००

धारावाहिक - ३०

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर

देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद - डॉ. सी. जय शंकर बाबु

अध्याय - ७. मक्कट् पेरु (संतान प्राप्ति)

पेऱुमवट्रुळ् यामऱिवदु इल्लै अऱिवऱिन्द

मक्कट्पेऱु अल्ल पिऱ । (कुरल - ६१)

सुबुद्धिमान

संतान की प्राप्ति ही

श्रेष्ठ लब्धि है

भावार्थ - संसार के सभी सुखों से बढ़कर, बुद्धिमान संतान की प्राप्ति जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धिमों में गिनी जा सकती है ।

एळुपिऱप्पुम् तीयवै तीण्डा पळिपिऱङ्गाप्

पण्बुडै मक्कट् पेऱिन् । (कुरल - ६२)

बच्चे गुणी हों

सात जन्म पाप, छू

नहीं सकता ।

भावार्थ - सदाचार संपन्न संतान हो तो सात जन्म तक भी कोई पाप स्पर्श नहीं कर सकता है ।

श्रद्धांजली

एकनाथ ठकूर का निधन

मुंबई : निजी और परदेशी बैंको की स्पर्धा में नागरी सहकारी बैंको को कॉर्पोरेट चेहरादेनेवाले और हजारों युवकों को बँकिग उद्यान का दालन नेशनल स्कूल ऑफ बँकिग की स्थापना द्वारा रास्ता खुला करनेवाले बँकिंग क्षेत्र के दादा व्यक्तिमत्व व शिवसेना पक्ष के भूतपूर्व संसद सदस्य एकनाथ ठाकूर का उनके ही घर पर दीर्घ बीमारी के बाद निधन हुआ. वे ७३ वर्ष के थे.

गत अनेक वर्षों से एकनाथ ठाकूर केंसर से पीड़ित थे. पिछले महीने से उनका स्वास्थ्य ज्यादा खराब था. एकनाथ ठाकूर का मृतदेह शुक्रवार प्रातः ११ से दोपहर ४ बजे तक प्रभादेवी के सारस्वत बैंक के भवन में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था. उसके बाद ५ बजे उनका अंतिम संस्कार किया गया. वे आंतर भारती, भारत जोडो, कथामाला, साधना परिवार से जुडे हुए एवं कार्य में सक्रिय सहयोगी भी थे. साने गुरुजी परिवार को उनके निधन से हुई हानि की भरपाई करना संभव नहीं. उनके प्रति पूरे परिवार की श्रद्धांजलि.

समाचार-भारती-१

रोटरी क्लब के समारोह में आंतर भारती गीत की प्रस्तुति

उदगीर (महा.) में जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में रोटरी क्लब की क्षेत्रीय परिषद संपन्न हुई जिसमें भाई सुब्बाराव जी द्वारा गाया हुआ भारत की सभी राष्ट्रभाषाओं में गाए हुए गीत की साभिनय प्रस्तुति आंतर भारती की ओर प्रस्तुत हुई. (देखें मुखपृष्ठ)

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

-टी.ई.एस. राघवन

श्री विल्लिपुत्तूर

श्री विल्लिपुत्तूर प्रमुख वैष्णव का है स्थान ।

विष्णुचित्त-आण्डाल के उद्भव का यह स्थान ।।

गोदा तो आण्डाल का अपर नाम है ज्ञेय ।

तिरुप्पावै-तिरुमोळि.हैं शोदाकृतिमाँ ज्ञेय ।।

रंगनाथ की प्रेमिका गोदा भक्तिविलीन ।

गोपीजन सम आण्डाल कृष्णभक्ति में लीन ।।

- १, हनुमंतरामन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नै - ६०० ००७

आन्तर भारती के प्रकाशन

* साने गुरुजी चित्रावली - १२० रु.*

* यति यदुनाथ - ५० रु. *

* साने गुरुजी विशेषांक - ५० रु. *

* आन्तर भारती गीतमाला - १५ रु. *

* कॅसेट / सी.डी. - ३० रु. *

प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल

औराद शहाजानी - ४१३५२२ (महा.)

मो. ०९८२३१५६७७७,

E-mail : aryavidyavanshi@gmail.com

अंग्रेजी भाषा की दासता कब तक

- शिवकुमार गोयल

हमें विदेशी अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुए पूरे ६६ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन हम अभी तक खुद को विदेशी भाषा अंग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं कर पाए हैं. अंग्रेजी भाषा की मानसिक दासता हमें बुरी तरह से जकड़े हुए हैं. हम अंग्रेजी को अन्तर्राष्ट्रीय व सबसे समृद्ध भाषा होने का भ्रम पालेहुए अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य प्रान्तीय भारतीय भाषाओं की घोर उपेक्षा करने में भी नहीं हिचकिचाते.

१४ सितम्बर १९४९ को राष्ट्रभाषा हिन्दी को भारत के कामकाज की भाषा घोषित किया गया था. हमारे स्वाधीनता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी, महामना पं.मदनमोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन जैसी अनेक विभूतियों ने देश के स्वाधीन होते ही अंग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद दिए जाने की उद्घोषणा की थी.

हिन्दी भाषी राज्य यदि राष्ट्रभक्ति के महत्व को समझकर अपने यहां तुरन्त हिन्दी को उपयुक्त स्थान देते व अंग्रेजी के मोह व दासता से मुक्ति पा जाते तो अन्य राज्यों को भी इसके लिए प्रेरित किया जा सकता था. टण्डनजी, निरालाजी, पं.श्रीरानारायण चतुर्वेदी, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी आदि ने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी की घाल मेल का प्रबल विरोध करके हिन्दी को विकृत किए जाने के षड्यन्त्र को असफल किया था.

ऐसे बढ़ा अंग्रेजी का दबदबा :

हिन्दी भाषी राज्यों के लोगों को लगा कि अंग्रेजी भाषा इस देश से जाएगी नहीं. अतः उच्च नौकरियों के लालच में अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने की प्राथमिकता देनी जारी रखी. अंग्रेजी भाषा का दबदबा बढ़ता गया व हमारी युवा पीढ़ी राष्ट्रभाषा हिन्दी की जगह विदेशी भाषा अंग्रेजी को प्रोत्साहन देने लगी. इसी के साथ विवाह, मुंडन संस्कार, नामकरण संस्कार, गृह प्रवेश जैसे सांस्कृतिक व धार्मिक संस्कारों के कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी की जगह अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित कराने में हम गौरव का अनुभव करने लगे. जो माता-पिता

व परिवारजन अंग्रेजी का एक शब्द नहीं पढ़ सकते, वे भी समझने लगे कि अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवाने में उनके परिवार की शान बढ़ेगी, लोगों पर रौब जमेगा.

हिन्दी भाषी क्षेत्रों के व्यापारी, दुकानदार तक अपनी फर्मो की दुकानों के नामपट्ट अंग्रेजी में लिखवाने में शान समझने लगे. फिर भला हिन्दी भाषी राज्यों के लोगों से हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित सम्मान दिए जाने की आशा कैसे कर सकते हैं ?

धर्माचार्य भी शिकार :

भारत धर्म प्राण देश है. हमारे धर्म, संस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम संस्कृत व हिन्दी भाषा है, लेकिन हमारे सन्त, महात्मा व धर्माचार्य भी अंग्रेजी भाषा की मानसिक दासता के शिकार होते गए.

१९७० में मैं दिल्ली में हिन्दी संवाद समिति 'हिन्दुस्थान समाचार' में सेवारत था. रामलीला के दिन थे. दिल्ली की एक बडी रामलीला समिति के आयोजकों ने हमारे कार्यालय को प्रेस सम्मेलन का अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र भेजा. मैंने एक धार्मिक समारोह का निमन्त्रण पत्र विदेशी भाषा में भेजे जाने के विरुद्ध समाचार प्रसारित कर दिया. देश भर के पत्रों में वह प्रमुखता से छपा. बाद में आयोजकों को क्षमा तक मांगनी पड़ी. मेरा कहने का आशय केवल यह है कि हमारे हिन्दी भाषी क्षेत्रों की धार्मिक व सामाजिक संस्थाएं भी विदेशी भाषा व विदेशी विकृतियों की दासता से ग्रासित हो चुकी हैं, फिर स्वदेशी व स्वभाषा की पुनर्स्थापना की किससे आशा की जा सकती है ?

'तात्याटोपे नगर' को टी.टी.नगर बनाया :

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्वरूप को भी नष्ट किया जा रहा है. मध्य प्रदेश में १८५७ के महान् स्वाधीनता सेनानी तात्या टोपे का बहुत आदर है. वहां के कुछ राष्ट्रप्रेमियों ने वर्षों के प्रयास के बाद भोपाल व जबलपुर में 'तात्या टोपे नगर' नाम की कॉलोनियां बसाईं.

अंग्रेजी के मानसिक गुलामों ने तात्याटोपे नगर का नाम टी.टी.नगर कर डाला. आप भोपाल जाएं तो स्कूटर या रिक्शा वाला आपको तात्याटोपे नगर पहुचाने को तैयार नहीं होगा. लेकिन टी.टी.नगर कहते ही वह समझ जाएगा कि आप कहां जाना चाहते हैं. दिल्ली के राम-कृष्णपुरम को आर.के.पुरम के नाम से

जाना जाता है. महात्मा गांधी मार्ग का नाम एम.जी.रोड कर दिया गया.

अंग्रेजी के निमन्त्रणों का बहिष्कार करें :

हिन्दी भाषी राज्यों के निवासियों को दृढ़-संकल्प लेना चाहिए कि वे अपने कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग बिल्कुल नहीं करेंगे. विवाह संस्कार व अन्य धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंग्रेजी में मिलनेवाले निमन्त्रण पत्रों का बहिष्कार करेंगे. मैंने १९७० में हिन्दी सेवी सांसद श्री प्रकाशवीर शास्त्री के समक्ष संकल्प लिया था कि मैं अंग्रेजी में मिलनेवाले किसी भी निमन्त्रण पत्र के कार्यक्रम में शामिल नहीं होऊंगा. मैं उसका पालन करता रहा हूं. जब कोई निकट का रिश्तेदार भी अंग्रेजी में निमन्त्रण भेजता है तो उसे आने से साफ मना कर देता हूं. मेरठ के साहित्यिक विभूति स्व.विश्वंभर सहाय प्रेमीजी के सुपुत्र श्री रत्नकुमार प्रेमी, मेरठ में प्रेमी मुद्रणालय के संचालक थे. उन्होंने संकल्प लिया था कि वे अपने मुद्रणालय में सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों के अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र नहीं छापेंगे. ग्राहक अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवाने आते, तो मातृभाषा के प्रति उसका सम्मान जागृत कर, उसे हिन्दी में छपवाने को तैयार करते. दुराग्रह करने पर विनम्रतापूर्वक कह देते 'मैं अंग्रेजी में नहीं छाप पाऊंगा.' आज रत्नकुमार प्रेमी जैसे हिन्दी पुरोधा की आवश्यकता है जो अंग्रेजी की मानसिक दासता को तार-तार कर राष्ट्रभाषा के प्रति स्वाभिमान की भावना जागृत कर सके.

हमें अपने देशवासियों के इस भ्रम को तोड़ना होगा कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है व उसके बिनाभारतीय ज्ञान-विज्ञान में अधकचरे रह जाएंगे. हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अपने दायित्व को पूर्ण करने का संकल्प लेना होगा.

(ओ३म् सुप्रभात से साभार)

आन्तर भारती के
आजीवन सदस्य (१५ वर्षों के लिए)
बनें और पाएं मासिक
आन्तर भारती, नि:शुल्क

विशेष आलेख-२

धुनी तरुणाई

- दस कार्यकर्ताओं के आत्मकथन

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे लोग धीरे-धीरे निराश होते गए. अस्सी का दशक आते आते कई काल के परदे के पीछे चले गए. आज़ादी के बाद जन्म लेनेवाली पीढी अबतक बडी हो चुकी थी. उनकी आकांक्षाओं के पंख निकल आए थे. लेकिन वास्तव भीषण था. गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, जातिवाद, धर्मवाद और साथ ही साथ राजकीय और प्रशासकीय भ्रष्टाचार इन कारणों से देश पूरी तरह क्षीण हो गया था. हमारा भविष्य क्या है? यह हर युवक की चिंता थी. ऐसे माहौल में युवा, रास्ते पर निकल आए. अस्सी कादशक युवकों का था. गुजरात, मराठवाडा और बिहार के नवयुक, आंदोलन में उतरे. इन युवकों को, स्वतंत्रता आंदोलन के युवा नेता जयप्रकाश नारायण जी का प्रतिभा सम्पन्न नेतृत्व प्राप्त हुआ. किसी भी प्रस्थापित विचारधारा के आधार पर देश की समस्याओं का समाधान होने से रहा, हमें अपनी राह स्वयं खोजनी है, इस सोच के साथ जे.पी.ने देश के युवाओं को संपूर्ण क्रांति के लिए आवाज़ दी. जे.पी.कहते थे कि, 'मुझे धुनी युवाओं की तलाश है.' बिहार के युवाओं का प्रतिसाद जबरदस्त था. उसके पीछे-पीछे महाराष्ट्र की तरुणाई ने भी जे.पी. की आवाज़ को प्रत्युत्तर दिया.

जयप्रकाश जी ने इन युवकों के लिए 'छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी' इस नाम का एक संगठन गठित किया. महाराष्ट्र से सैकडों में ऐसे धुनी तरुण इस संगठन में आए. उनमें दस युवकों के आत्मकथन 'धुनी तरुणाई' इस किताब के रूप में प्रकाशित किए गए हैं. प्रसिद्ध साहित्यिक मिलिंद बोकिल और अमर हबीब इन्होंने इस संकलन को संपादित किया है. ये दोनों भी संघर्ष वाहिनी का सक्रिय हिस्सा थे. मिलिंद बोकिल ने इस पुस्तक के लिए प्रदीर्घ प्रस्तावना लिखी है. जिस तरह वह इतिहास की परतें खोलनेवाली है, उसी तरह कार्यकर्ताओं के मन के दरवाजे खोलनेवाली भी है. रजिया पटेल, अरुणा तिवारी, चन्द्रकान्त वानखेडे, मोहन हिराबाई हिरालाल, भीमराव मस्के, शोभा शिराढोणकर, कुंज विहारी, शैला सावन्न, शेषराव मोहिते और अमर हबीब इन दस व्यक्तियों ने जीवन की यात्रा में वाहिनी के दिन याद किए हैं. ये

कार्यकर्ताओं के मनोगत हैं. इस कारण इनमें किसी ने भाषा का सौंदर्य या साहित्यिक कारीगरी ढूंढने का प्रयत्न किया तो उसके हाथ निराशा ही आएगी. लेकिन अस्सी के दशक के युवाओं के दिलों के स्पंदन मात्र उनमें साफ सुनाई देंगे. जीवन, समाज को समझने के लिए और उसे बदलने के लिए अधीर जनों के ये मनःस्पंदन हैं.

आंदोलन होते हैं. कार्यकर्ता अपने जीवन झोंक देते हैं. कुछ निराश भी होते हैं. कुछ इस आशा के साथ चलना जारी रखते हैं, कि आज नहीं तो कल आखें प्रकाश देख पाएंगी. ऐसे कार्यकर्ताओं के इतिहास कहीं दर्ज नहीं होते. वाहिनी के कार्यकर्ताओं की भी स्मृतियाँ अधिकृत रूप से दर्ज नहीं थीं. इस पुस्तक ने ऐसी टिप्पणियों का महत्व अधोरेखित किया है. भिन्न-भिन्न आंदोलन में हिस्सा लेनेवाले कार्यकर्ताओं के आत्मकथन, समय के पेट में गुप्त होनेवाले वास्तव को खींचकर उसमें निखार लाते हैं, यह इस किताब से स्पष्ट होता है. ये आत्मकथन पढ़ने के बाद जे.पी. आंदोलन के महीन धागे एकदूसरे से अलग किए जा सकेंगे. अपने समकालीन कार्यकताओं के बोलते आत्मकथन जरूर पढे जाएं, ऐसे हैं.

'धुनी तरूणाई'

संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब

पृष्ठ १६०, कीमत १५० रु.

प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई-४३१५१७ (महा.)

अनुवादक - ज्योतिराव लढके

चेतस, २२, बाजीप्रभुनगर, नागपुर-४४००३३

धुनी तरुणाई के आत्मकथन आगामी (अक्टूबर २०१४ से) क्रमशः प्रकाशित होंगे.

आन्तर भारती प्रकाशन

आन्तर भारती (मासिक)

के ग्राहक बने / बनाएं

पुरस्कार वितरण सम्मारोह रपट

केरल हिन्दी प्रचारसभा में २ अगस्त २०१४ को एक विशाल पुरस्कार वितरण सम्मेलन आयोजित किया गया. वर्ष २०१२-१३, २०१३-१४ (फरवरी तक) चलायी गयी हिन्दी प्रथम से साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में राज्यस्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त सौ छात्र-छात्राओं तथा राज्य भर के स्कूलों में पाठ्यक्रम के अनुसार आयोजित सुगम हिन्दी परीक्षाओं में कुल मिलाकर रु. ५0000/- के मूल्य के ग्रंथ पुरस्कार के रूप में बाँट दिये गये. पुरस्कार के साथ प्रमाण-पत्र भी दिये गये.

उपर्युक्त वर्षों की विविध परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को शामिल करनेवाले एवं छात्रों को अधिक उच्च श्रेणियाँ प्राप्त करने के लिए सक्षम बनानेवाले सर्वोत्तम हिन्दी प्रचारक को सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष अधिवक्ता एस.वी.कुक्किल्लाया पुरस्कार (नकद राशि, प्रमाण-पत्र तथा दीप सहित) तथा रामेश्वर दयाल दुबे पुरस्कार (नकद राशि प्रमाण-पत्र) दिये गये.

सम्मेलन में राज्य के शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में काम करनेवाले ख्यातिप्राप्त सज्जनों ने वक्तव्य दिये. उन्होंने दक्षिण में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लि केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रयत्नों की प्रशंसा की.

हिन्दी देश की सांस्कृतिक एकता और आत्माभिमान की भाषा है, इसलिए हर भारतीय में हिन्दी बोलने और लिखने की क्षमता होनी चाहिए इस बिन्दु पर वक्तव्यों पर बल दिया गया.

मानव विकास मंत्रालय के सहयोग से आयोजित प्रस्तुत सम्मेलन का उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के राज्य स्तरीय अध्यक्ष श्री.वी.मुरलीधरन ने किया. महात्मागाँधी विश्वविद्यालय के पूर्व समकुलपति डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ की अध्यक्षता में हुए प्रस्तुत सम्मेलन में डॉ.एषुमट्टूर राजराजवर्मा (पूर्व भाषत्तविद्, केरल सरकार), मलयिनकीष गोपालकृष्णन (विख्यात पत्रकार) और डॉ.एस.राजप्पन नायर (केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष) ने आशीर्वाद भाषण दिये.

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री वी.मुरलीधरन ने अपने उद्घाटन भाषण में

भारत की आजादी की लडाई में राष्ट्रभाषा हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका का जिक्र किया. विविध प्रान्तों के लोगों को एकता की डोरी में बाँधने के लिए महात्मा गाँधीजी ने हिन्दी को चुना यद्यपि उनकी मातृभाषा गुजराती थी. हिन्दी में भारत की विरासत सुरक्षित है. भारतीय संस्कृति है जिसका प्रतिनिधित्व हिन्दी करती है. हिन्दी भारत की राष्ट्रीय एकता की ही नहीं, बल्कि देश के स्वाभिमान की भी भाषा है. इस कारण हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं विकास के लिए प्रयास करना प्रत्येक भारतीय का पुनीत कर्तव्य है.

प्रस्तुत सम्मेलन में भाग लेनेवाले छात्रों, हिन्दी प्रचारकों, अध्यापकों एवं हिन्दी प्रेमियों से सभा भवन खचाखच भरा था.

(प्रो.एन.माधवनकुट्टि नायर, मंत्री)

केरल हिन्दी प्रचारसभा में २ अगस्त २०१४ को आयोजित विशाल पुरस्कार वितरण सम्मेलन का उद्घाटन करते हैं 'भारतीय जनता पार्टी' के राज्यस्तरीय अध्यक्ष श्री.वी.मुरलीधरन. समीप बैठे हैं प्रो.एन.माधवनकुट्टि नायर (शर)हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा), डॉ.एषुमट्टूर राजराजवर्मा (विख्यात लेखक), डॉ.एन.रवीन्द्रनाथ (विश्वविद्यालय के पूर्व समकुलपति), मलयिनकीष गोपालकृष्णन (विख्यात पत्रकार) आदि.

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम में २ अगस्त २०१४ को आयोजित पुरस्कार वितरण सम्मेलन में सर्वोत्तम हिन्दी प्रचारक का पुरस्कार पा रहे हैं श्री पी. मुरलीधरन. पुरस्कार समर्पण कर रहे हैं श्री.वी.मुरलीधन पास खडे हैं सभा के मंत्री प्रा.एन.माधवनकुट्टि नायर.

विशेष आलेख-३

'झुंडशाही' की प्रजातंत्र के पीठ पर सवारी

- अमर हबीब

झुंडशाही के सामने किसी की कुछ नहीं चलती. झुंडशाह समूह का नाश करता है. यातायात में गतिरोध पैदा करता है. दैनंदिन व्यवहार में बाधा लाता है. व्यक्ति की अप्रतिष्ठा करता है. भारतीय राज्य घटना के दिए हुए मूलभूत अधिकार, ''अभिव्यक्ति की स्वातंत्रता'' पर प्रतिबंध लगाता है. इतना ही नहीं तो मनुष्य के जीने का अधिकार भी छीन लेता है. झुंड को विवेक नहीं होता. झुंड के आतंक के सामने साधारण मनुष्य लाचार हो जाता है. चुपचाप सहने के सिवाय वह कुछ नहीं कर सकता. आजकल ऐसी घटनाएँ निरन्तर निरन्तर बढ़ रही हैं. हम एक अराजकता का सामना कर रहे हैं.

प्रगतिशील देशों में व्यक्ति स्वातंत्र्य को प्रधानता दी जाती है. वहां की शासन संस्था व्यक्तिस्वातंत्रय की रक्षा करने के लिए सतर्क रहती है. इसके विपरीत अप्रगत देशों में अस्मिता का अहंकार तीव्र होता है. चिनगारी पडते ही आग भडकती है. झुंड तैयार हो जाता है. कभी इस झुंड को धर्म का घमंड चढ़ता है, कभी जाति का, कभी किसी महापुरुष या किसी बडे नेता का. झुंडी व्यक्तिस्वातंत्र्य का हनन करता है. प्रजातंत्र देशों में मतों के गठ्ठे प्राप्त करने के लिए राजकारणी लोग झुंडशाही को खादपानी डालते रहते हैं. अप्रगत देशों में व्यक्तिस्वातंत्र्य की उपेक्षा की जाती है. इसलिए लोगों का लोकशाही पर विश्वास कम कम होता जा रहा है.

भारत में लोकशाही लहलहाई ? जातीयता, धार्मिकता, भाषावाद, प्रादेशिकता कारण हैं. पर इनके मूल में आर्थिक कारण हैं. स्वतंत्रता के बाद सरकार की आर्थिक नीति गलत होने की वजह से देश का विकास थम गया. तेजी से नए रोजगार निर्माण नहीं हुए. बेरोजगारी की संख्या बढ गई. युवकों में प्रचण्ड ऊर्जा होती है वह उत्पादक्ता से जोडी न जाने से झुंड्शाही के रूप में व्यक्त हो रही हैं.

कारखाने, खेती तथा कचहरियों में अच्छा काम करने वाले आदमी मिलते नहीं. दूसरी तरफ बेरोजगारों की संख्या दिनबदिन बढती जाने के आंकडे बता रहे हैं. एक तरफ अच्छे आदमी मिलते नहीं तथा दूसरी तरफ बेरोजगारों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है. यह उलझन है. यह सुलझाने के लिए परिस्थिति ठीक से समझनी होगी. आसपास फिरने वाले श्रीमंत लोग एक तो

धोखा देकर संधी का लाभ लेकर अमीर हैं. दूसरे भ्रष्ट मार्ग से पैसा कमाया होता है या लॉटरी लगने जैसा अटकपच्ची से धनी हुए होते हैं. कष्ट करके ईमानदारी से श्रीमंत हुआ आदमी क्वचित ही दिखते हैं. वह अपवाद कहलाता है. ऐसे समाज में प्रमाणिकता से सचाई से कष्ट करके श्रीमंत हो सकते हैं. इस पर किसी का विश्वास बैठता नही हैं. हमें ऐसा मौका मिलेगा, इस आशा पर अनेक लोग प्रतीक्षा करते रहते हैं. ऐसे रहने में एक तरह की बेपरवाही अपने आप आ जाती है. यही तो अनुत्पादक गरीबों का बेजवाबदार समुदाय है. इस समुदायका कुछ उत्तरदायित्व नही होता. बंधन नहीं होता. उन्हें उत्पात मचाने का निमित्त चाहिए. ऐसे समुदाय की कुछ चतुर मंडली अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए उपयोग करते हैं यही झुंडशाही है.

आजकल उत्पात करनेवालों में छोटे बच्चे बहुत उत्साह से भाग लेगे हैं. यह उससे भी ज्यादा चिन्ता की बात है. कहीं पर दूर किसी मूर्ति का अनादार करने की खबर आते ही यहां रेलवे रोकली जाती है, आगजनी करते हैं, वाहन तोड़े जाते हैं, पत्थर मारनेवाले कौन - होते हैं ? बीस वर्ष के अन्दर के बच्चे पढ़ने की उम्र में वे यह क्या कर रहे हैं इसका बारकाई से अध्ययन करना चाहिए. सीखने से फायदा होता है. ऐसा अनुभव नहीं आता इसलिए ज्यादा पढकर क्या करेंगे ? आवश्यकतानुरुप सीख लें तो काफी है ''यह भावना आती हैं. स्कूल कॉलेज में नाम रहने पर भी शिक्षण के प्रति मन पूरी तरह से वंचित हुए बच्चे हैं. हमारा स्कूल का शिक्षण मुक्त (अनिवार्य) है पर यह सब बेफायदे का है. शिक्षण खरीदी मिले तो परवाह नहीं वह फायदे का होना चाहिए. मुफ्त शिक्षण पर जितना जोर दिया है अगर फायदे के शिक्षण पर दिया जाता तो ये बच्चे शायद इस मार्ग पर नहीं रहते. सीखेंगे तो फायदा होगा यह दृढता से अनुभव में आ गया तो यही बच्चे कल काम करके सीखने जाएंगे अन्यथा ये झुंडशाही का ''कच्चा माल'' बन जाएंगे.

हमारे समाज में झुंड का उपद्रव जातिधर्म या प्रदेश-भाषा के रूप में आता है. इसका स्वरूप अन्य बाधाओं से अलग है. ब्रूनो कहते हैं कि पृथ्वी के चारों तरफ विश्व घूमता है यह समझ गलत है. उस समय की समझ को वह धक्का था. कर्मठों ने उसे जीवित जला दिया. कालान्तर में सारे विश्व ने उसका कहना मान्य किया. उस समय के समाज ने जो किया वह वास्तव में गलत था. आज तो उससे ज्यादा विदारक होता है. ब्रूनो तथा गॅलिलिओ मान्य नहीं हुए और उन्होंने उनको दंड दिया. आज तुमने झुंड को न पटनेवाले अन्य प्रस्तुत

किया. तो झुंड केवल तुम पर हल्ला करके चुप नहीं रहनेवाला, तुम्हारे परिवार पर हल्ला करेगा, तुम्हारे जातिधर्म के लोगों को भी नहीं छोडेगा, प्राचीन शिकारी लक्ष्य साधकर पक्षियों का शिकार करते थे आज का झुंड पूरे पेड को ही जला देता है. उस प्रजाती का पक्षी जहाँ दिखे वहीं उसे खतम करता है. सत्य बोलने वाला अपनी जान की परवाह नहीं करता, परन्तु जब उसकी लडकी को निशाना बनाया जाय, उसकी बस्ती ही जलाई जानेवाली हो तो सत्य बोलने की हिम्मत कोई करेगा क्या ?

- हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार-भारती-३

श्वसुर ने किया बहू का कन्यादान

जीवनभर चोली चूडी करूंगा : अंधकारमय जीवन में प्रकाश की किरण

- श्री विनोद कापसे, यवतमाल, मांगलादेवी

(तीन एकर खेती बहू के नाम पर. पुत्र की मृत्यु के बाद बहू का जीवन उद्धवस्त न हो इसलिए प्रकाश घावडे ने कुछ दिन पूर्व तीन एकर खेती, 'माला' के नाम पर कर दी. माला को पिता नहीं है. प्रकाश घावडे ने शादी की पत्रिका में भी माला के नाम के आगे अपना नाम लिखवकर उसे पिता न होने का दुःख होने नहीं दिया. जीवन भरउसे चोली-चूडी करने का निर्णय उन्होंने लिया.)

यवतमाळ : इकलौता बेटा वंश का दिया जिंदगी के एक मोड पर अचानक बुझगया. बहू का जीवन अंधकार से भर गया. पुत्र वियोग के आकाश जितने दुःख मन में छिपा कर महाराष्ट्र के प्रगतिशील परंपरा को शोभित करनेवाला निर्णय गांव के एक गृहस्थ ने लिया. विधवा बहू को ही अपनी पुत्री मान कर उसका ठाटबाट से पुनर्विवाह करा दिया. जो १४ महीने पूर्व ससुर था वही गृहस्थ उसका पिता हो गया. कन्यादान करके बहू के अंधकारमय जीवन में प्रकाश का बीज बोया. नेर तालुका के चिरवली कान्होबा निवासी प्रकाश घावडे के निर्णय से समाज के सामने एक नया प्रकाश मार्ग शुरू हुआ.

श्री प्रकाश तथा चन्द्रकला घावडे को राजेंद्र नाम का इकलौता पुत्र था. चौदह महीने पूर्व उन्होंन राजेन्द्र का धूमधाम से विवाह कर दिया. सारा घर आनंद में भीग गया था. परन्तु इस सुखी संसार को नियती की नजर लग गई.

नामानुरूप प्रकाश मार्ग पर जीवन जीनेवाले प्रकाश घावडे को किसी भी स्थिति में बहू के जीवन में प्रकाश ज्योति लगाने का ध्यान बेचैन कर रहा था. सीने पर पत्थर रखकर उन्होंने वर ढूंढना शुरू किया. पत्नी चन्द्रकला ने भी इस कठिनकाल में उनके निर्णय को दृढता से बल दिए. चांदूर रेल्वे में अमोल दत्तूजी बनाईत इस पदवीधर तरूण माला से शादी करने तैयार हो गया और २० जुलाई के दिन मांगलादेवी यहाँ के मंगलादेवी संस्थान में सैकड़ो ग्रामवासियों की उपस्थिति में माला ने अमोल के गले में वरमाला पहनाई. उस समय प्रकाश और चन्द्रकला की आँखों में केवल आंसुओं का सैलाब उमडा हुआ था. पुत्रवियोग के दुःख तथा बहू को दिए हुए नवजीवन के आनन्द इन सुखदुःख की संमिश्र भावनाओं से प्रत्येक की आंखें डबडबाई थीं.

विनोद कापसे, मांगळा देवी

(लोकमत से साभार)

संस्था परिचय

असल

जैविक आहार तथा नैसर्गिक उपज भंडार

- जब्बरमल शर्मा

मूल्य प्रणाली का एक निष्कर्ष है जो किसी भी प्रकार के शोषण के चाहे वह व्यक्ति का हो, संस्था का हो या प्राकृतिक संसाधनों का, नकारता है. एक आंतरिक यात्रा हमें कुछ उत्तर खोजने को बाध्य करती है.

युवा, प्रतिभाशाली, व्यवसायी, सॉफ्टवेयर इंजीनियर अनेक विकारों का रोगों के सूचक उच्च रक्तचाप तथा तनाव के शिकार क्यों होते है ? उच्च वेतन पेकेज के बावजूद भी वे तनाव ग्रस्त तथा अत्यधिक दग्ध हो उठते हैं.

आजकल के अव्यस्थित जीवन को नजदीक से देखें तो एक मानसिक तथा शारीरिक विकास तथा सीमित संसाधनों का दोहन स्पष्टरूप से कहता है कि हमारी आधुनिक जीवन शैली हमारे अस्तित्व को अच्छा बनाने के बजाय नुकसान ज्यादा कर रही है. क्या यही प्रगति है.

शरीर व मस्तिष्क के द्वारा हमारा जीवन सुस्पष्ट होता है. इसलिए एक अच्छे

स्वास्थ्यप्रद जीवन जीने के लिए दोनों की पवित्रता बनाए रखना अत्यावश्यक है.

असल के आश्चर्यजनक प्रयास

अनेक प्रकार के हानिकारक रसायन गलती या अर्नामज्ञता से खाद्यान्न तथा घरेलु उत्पादों में प्रयोग में लाए जा रहे हैं जो विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे रहे हैं. इसके अतिरिक्त औद्योगिकरण, व्यावसायीकरण तथा उपभोक्तावाद ने युगों पुरानी सरल तथा आसान परम्पराओं को नियंत्रित कर लिया है. खाद्य तेल को शुद्ध करने के लिए हानिकारक पेट्रोलियम रसायन काम में लिए जा रहे हें. गुड को अच्छा दिखाने के लिए चार प्रकार के अम्ल व प्रक्षालन पाउडर काम में लिए जाते हैं.

* शक्कर में गन्धक (सल्फर) का उपयोग रहा है. खाद्यान्नों तथा दालें उर्वरक तथा कीटनाशकों से भरी हैं.

* अंगराग (कोसमेटिक) तथा सौन्दर्य प्रसाधनों में कैंसर पैदा करनेवाले तत्व हैं.

* कृत्रिम (सिनथिटिक) रंग तथा कृत्रिम कपडा त्वचा के लिए हानिकारक है.

* स्टील तथा एल्युमिनम् के बर्तन, उनके स्वयं के गुणों के कारण अनेक प्रकार की बिमारियाँ उत्पन्न करते हैं.

..... और क्या नहीं

जब कि **असल** मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा ब्रह्माण्ड के सामान्य स्वास्थ्य का सम्मान करनेवाली उत्पादन प्रणाली है.

शायद यह प्रथम व्यापारिक परिसर है जो कभी भी बिजली का बिल्कुल प्रयोग नहीं करता है. यह परिसर पर्यावरण अनुकूल अरण्डी के तेलवाले लेम्पों से प्रकाशित होता है. हस्त संचालित परम्परागत पंखों द्वारा शीतल हवा उपलब्ध करायी जाती है.

एक वर्षा जल संग्रहण टैंक तथा कोयला व लकड़ी द्वारा खाना बनाने का परम्परागत तरीका, असल संस्था की व्यावहारिक सरल जीवन पद्धति में योगदान देता है.

असल सुविधाएँ :

असल इस विचार को सहज बनाता है कि प्रत्येक मानव को सत्य की खोज की यात्रा करनी चाहिए.

सार्वजनिक हित की भावना हमें ऐसे उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित करती है. जो शरीर और दिमाग को जीवन की आंतरिक यात्रा सरलता से करने में समर्थ बनाए, विभाजन और अंतरंग को भरे और अंततः प्रसन्नता एवं संतोष की ओर अग्रसर करे.

इसका अर्थ है कि हम कृत्रिम वस्तुएँ नहीं अपनाएँ और बनावटी सामान से दूर रहें और प्रकृति के साथ रहें.

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह मस्तिष्क ही है जो बंधन अथवा मुक्ति के लिए उत्तरदायी हैं. आइए हम ज्ञानियों द्वारा दिखाए गए सत्य के मार्ग को खोजें.

इस सुन्दर ग्रह को अपशिष्ट पदार्थों का कचराघर बनाने से रोकें.

असल संस्था के उत्पाद :

श्रृंगार सामग्री तथा अंगराग :

नैसर्गिक अत्तर (गुलाब, चमेली, खश, केवड़ा, हीना, जेस्मिन), गुलाब जल - आयुर्वेदिक स्नान पाउडर नहाने का साबुन (चंदन लकडी, ग्लिसरीन) बालों का तेल आंवला व जड़ीबूटी लकड़ी का कंघा. धोने का साबुन तथा पाउडर हीना (मेंहदी) चेहरा व बालों का पेक. तुरई

खादी कपड़ा :

(हाथ का बनाया व काता हुआ)

स्वाभाविक डाई हुआ कपड़ा तथा ब्लॉक प्रिन्टेड धोतियाँ (साड़ियाँ) बिना हिंसा की मटका रेशम हाथ के कसीदे की वस्तुएं. सूती / लकड़ी की योग करने की चटाई - हाथ से सिला हुआ बटुआ रूमाल.

बर्तन :

कांसा, धातु की घंटी - थाली (प्लेट) - वाटकी (प्याला) (कॉच) ग्लास-चम्मच

खाना पकाने हेतु तांबा व पीथल के बर्तन

ग्लास हॉडी :

कॉच की हाँडी (झाड) ५-७-९-११ इंच सभी रंगों में. छोटो हॉडी स्टेण्ड (उपहार हेतु)

उपज सूची : जैविक व प्राकृतिक उपहार

(सभी उपज बिना जीएमओ के, हाथ की प्रक्रिया मुक्त तथा बिना किसी कृत्रिम मिलावट के चावल (मूरे, कमोड, बासमती, इन्द्रानी)

गेहूँ / जौ (जेव) बाजरा / ज्वार / मुरमुरा /पोहे

मूंग / मोठ / चना

मूंगदाल (छिलका/मोगर)

अरहर की दाल (चनादाल/तुवर दाल/उडद दाल)

तिल (काला-सफेद)

आयुर्वेदिक गर्म मसाला

घी (गाय-भैंस)

तिलों का तेल / रेपसीड तेल / सरसों का तेल / नारीयल तेल

शक्कर / डला शक्कर (गंधक व रसायन रहित.)

गुड (रसायन रहित)

खूबानी / अखरोट

दाँत पाउडर (आयुर्वेदिक) / आयुर्वेदिक मुखवास (माउथ फ्रेशर)

हींग / खनिज नमक / (सैंधानमक)

केसर (कश्मीर / ईरान)

आँवला / बिजोरा मुरब्बा

गुलकंद / गुलाब की पत्तियों का आचार / मुरब्बा

सरसों के बीज / मेथी

शर्बत / कोकम, मिण्डी, गुलाब, खश, सौंफ

मुखवास

जीरा, धना, हल्दी / लालमिर्च / धना / जीरा

कालीमिर्च, इलायची, लौंग, जायफल

समाचार-भारती-४

शोलापुर जिला : साने गुरुजी कथामाला शोलापुर (महा.)

का वार्षिक विवरण २०१३-१४

* ६ मई २०१३ : शिक्षकों के शिविर में भारतीय संविधान इस विषय पर भाई पन्नालाल सुराणा का व्याख्यान.

* ११ जून २०१४ : सानु गुरुजी स्मृतिदिन के उपलक्ष्य में साने गुरुजी का जीवन इस विषय पर प्राचार्य नरेश बदनोरे का व्याख्यान हुआ. प्राचार्य रंगसिद्ध धसाडे व अवधूत म्हामाणे ने भी उपक्रमों के बारे में विचार प्रस्तुत किए. सूर्य प्रकाशन के नागेश सुरवसे ने अखिल भारतीय साने गुरुजी कथामाला के उपाध्यक्ष चुने जाने पर तथा कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अशोक खानापुरे तथा भीमराव गुंडेकर का स्वागत किया.

* ११ जुलाई २०१३ : मोहोळ जिला सोलापुर के शिक्षकों के लिए ६४ शिक्षकों का 'गीतमंच शिविर' संपन्न हुआ.

सोलापुर में भी २८ सितम्बर २०१३ को ५० शिक्षकों का 'गीतमंच शिविर' हुआ. कस्तूरबाई अध्यापक महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों के लिए भी 'गीतमंच शिविर' का आयोजन हुआ.

* कथाकथन शिविर :

- २८ जुलै २०१३ को न्यू इंग्लिश स्कूल सांगोला
- २२ आक्टोबर २०१३ को मेरी बी हार्डिंग अध्यापक विद्यालय
- २१ दिसम्बर २०१३ श्री शिवाजी अध्यापक विद्यालय
- १४ मार्च २०१४ को दयानंद शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय में कथाकथन तंत्र व मंत्र संबंधी शिविर सम्पन्न हुए.
- २१ सप्टेंबर २०१३ मराठी सामान्य ज्ञान स्पर्धा सोलापुर में संपन्न हुई जिसमें ५६ विद्यालयों के ७५७१ विद्यार्थियों ने भाग लिया.

* वाचन प्रकल्प : सोलापुर जिले के ८ विद्यालयों में पुस्तक बँक के लिए पुस्तक पेटियाँ दी गई.

* बाल आनन्द मेला : सोलापुर जिल्हे के २१ प्राथमिक विद्यालयों के ४००

विद्यार्थी एवं ४० शिक्षकोंने बाल आनन्द मेले में भाग लिया.

* दन्तशिविर : कोर्वली जिला शोलापुर के जिला परिषद प्राथमिक स्कूल के २५० विद्यार्थियों के दांतों की जांच कर उन्हें रोटरी क्लब सोलापुर की तरफ से ब्रश और पेस्ट दिए गए.

* बैठकें : ९ अप्रैल २०१३ से ३१ मार्च २०१४ तक कथामाला सोलापुर के कार्यकारिणी समिति की तथा एक साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई.

* जमा खर्च : १ अप्रैल २०१३ से ३१ मार्च २०१४ तक कुल रु.१०८७२० का आयव्यय विवरण सदस्यों को भेजा गया.

हिन्द प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार-भारती-५

आंतर भारती, अंबाजोगाई

अंबाजोगाई में रहनेवाले अन्य भाषिकों से संवाद

भाईयो और बहनो,

आप अपना गांव, परिवार तथा अपने प्रदेश को छोड कर यहां आये हो, हम आपका स्वागत करते हैं.

स्थलांतर करना आसान बात नहीं है. स्थालांतरितों को कई दिक्कतों का मुकाबला करना पड़ता है. इस का हमे एहसास है. अंबाजोगाई में जन्मे कई बच्चे आज भारत के भिन्न शहरों में पढाई या रोजगार के लिये गये हैं. कई विदेशों में भी हैं. इसलिए स्थालांतरितों का एहसास अंबाजोगाईकर आसानी से कर सकते हैं. इसी एहसास के साथ हम आप से स्नेह का रिश्ता महसूस करते हैं.

१९९० के बाद बड़ी संख्या में स्थलांतर हुए. कुछ लोगों को मजबूरी में गाव छोडना पडा. कुछ ने अधिक उन्नति के लिए छलांग लगाई. अंबाजोगाई में आनेवालों में सभी स्तर के लोग हैं तथा वे लगभग सभी प्रांतों से आये हैं. भिन्न भाषा और परंपराओं को साथ लाये हैं. इन में शिक्षक, प्राध्यापक, विद्यार्थी, मजदूर पेशा तथा व्यावसायिक हैं, अंबाजोगाई मानो एक छोटा भारत बन गया है.

स्थालांतर करने के कई कारण होते हैं. बहुत सारे लोग किसी मजबूरी के कारण स्थलांतर करते हैं. ऐसे लोग आम तौर पर किसी बडे शहर को जाना पसंद करते हैं. अंबाजोगाई जैसे छोटे स्थान को वही लोग चुन सकते हैं, जिनका आत्मविश्वास बुलंद होता है. जो पत्थर से पानी निकालने की हिंमत

रखते हैं.

अंबाजोगाई में आकर बसनेवालों की परंपरा बहुत पुरानी है. यह गाव बाहर से आनेवालों का स्वागत करता आया है. मराठी के आद्यकवि मुकुंदराज, उत्तर की दिशा से यहां आये थे और यहां आकर बस गये थे. उन्होंने अपनी रचनायें इसी अंबाजोगाई की वादियों में की. दासोपंत दक्षिण से आये थे और यहीं उन्होंने विपुल साहित्य का निर्माण किया. स्वामी रामानंद तीर्थ ने यहां आकर योगेश्वरी शिक्षण संस्था की स्थापना की और हैदराबाद मुक्ति संग्राम का नेतृत्व किया. डॉ.व्यंकटराव डावळे भी बाहरसेही आये थे, उन्होंने अंबाजोगाई में मेडीकल कॉलेज की नींव रखखी तथा वह पहले अधिष्ठाता बने. यह तो जाने पहचाने लोग हैं, हजारों ऐसे भी लोग यहां आये और बस गये जो मशहूर नहीं हुये. लेकिन अंबाजोगाई को सुंदर बनाने में बहुत योगदान दिया.

अंबाजोगाई अमन की जगह है. इसे बनाये रखना है.

यह चमन सदा हराभरा रहे इस लिये योगदान करते रहना है.

आंतर भारती साने गुरुजी द्वारा संस्थापित संस्था है. वह धर्म, जाति, प्रदेश, लिंग ऐसा कोई भेदाभेद नही मानती. सभी मनुष्य आपस में भाईभाई हैं, इसपर हमारा दृढ विश्वास है. भिन्न भाषिकों में मैत्री बनाना हम अपना काम मानते हैं. इसी प्रेरणासे हम आपको निम्नलिखित कार्यक्रम के लिए आमंत्रित कर रहे हैं.

इंजिनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य श्री बाबू खडकभावी सर ने शिक्षा के क्षेत्र में बडा महत्त्वपूर्ण योगदान किया है. हम प्रातिनिधिक रूप से उनका १५ ऑगस्ट २०१४ को शाम ६ बजे, राजस्थानी मंगल कार्यालय में सत्कार करने जा रहे हैं. यह सत्कार ऐसे व्यक्ति का होगा, जो महात्मा बसवेश्वर और पुरंदरदास के कर्नाटक से स्वयं स्थलांतर कर के अंबाजोगाई में आकर जिसने अंबाजोगाई के गौरव को ऊंचा किया.

आप भी इस सत्कार समारोह में शामिल हो कर अच्छे काम की सरहाना करें. आपस में मेलजोल बढाएँ.

अमर हबीब

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, आंतर भारती, अंबाजोगाई-४१३५१७ (महा.)

गणपत व्यास	प्रतिभा देशमुख	दत्त वालेकर	ख्वाजा नाजिमोद्दीन
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष

संयोजक : एस.बी.सय्यद, अभिजित जोंधळे, अंकुशराव काळदाते, हेमंत धानोरकर

मोगा (पंजाब) के ईंट भट्टे से रिहा कराये २५ दलित बंधुआ मजदूर

सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है. दिल पर हाथ रखकर कहिये देश क्या आजाद है ?

इन पंक्तियों के माध्यम से आज की देश की व्यवस्थाओं पर सीधा व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है. आज़ादी के ६७ वर्ष बाद भी देश का दलित और आदिवासी तबका आज भी गुलामी के अंधेरे में शोषण और अत्याचार को भोगने पर मजबूर है. समाज कंटक खुले आम मानव तस्करी का व्यापार कर रहे हैं और तो और दलित और आदिवासियों को बंधुआ मजदूरी की आग में झोंकने से तकनिक भी नहीं कतरा रहे हैं. आज आज़ादी उन बंधुआ मजदूरों से कोसों दूरी पर खड़ी है जो ईट भट्टों पर नारकीय जीवन जी रहे हैं. बंधुआ मुक्ति मोर्चा ऐसे बंधुआ मजदूरों को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराकर स्वतन्त्रता से जीने की राह प्रदान कर के इस मुल्क में संघर्ष का रथ दौड़ा रहा है.

यह कोई फिल्मी या मनगढ़न्त कहानी नहीं है बल्कि एक सच्ची घटना है जिसको बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने प्रकाश में लाकर पंजाब सरकार के विकास के दावे पर कड़ा तमाचा मारा है. २५ दलित मजजूरों को बंधुआ मजदूरी से मुक्ति दिलाकर उन्हें आज़ादी की खुली हवा में सांस लेने हेतु नया जीवन प्रदान किया है.

वर्ष २०१३ में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर निवासी श्री धर्मेन्द्र कुमार ने जिला सहारनपुर एवं गांव माहम्मदपुर, रूड़की, हरिद्वार (उत्तरांचल) के भोले-भाले दलित ईंट भट्टा मजदूर परिवारों को काम का मोटा दाम और अन्य सुख सुविधाओं का झूठा लालच दिया और अपने चुंगल में फंसाकर मानव तस्करी रूपी काल का थाल बना डाला. लगभग ३-४ परिवार के २५ दलित ईंट भट्टा मजदूरों को एक ट्रक में लादकर सीधा पंजाब के मोगा जिले के बधापुराना तहसील के गांव आलमवाला में संचालित ब्रार ग्राम उद्योग समिति एस.एम.ईंट भट्टें के मालिक श्री सुरेन्द्र कुमार से मोटी रकम पर सौदा करके बेच दिया. सौदे

की रकम को ब्याज सहित वसूलने और मोटा मुनाफा कमाने के चक्कर में मालिक सुरेन्द्र कुमार ने मजदूरों से बेगार करवाया और बदले में मजदूरी के बदले कई यातनाएं तक दे डालीं.

बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने अपने विशेष सूत्रों से इसमामले का पता लगाकर मोगा जिले के जिलाधिकारी श्री परमिन्दर सिंह गिल को शिकायत पत्र भेजा. जिलाधिकारी ने उप खण्ड अधिकारी बघापुराना को इस मामले में आदेश जारी किये. तहसीलदार, डी.एस.पी.सहायक श्रम आयुक्त की टीम गठित की. गठित टीम ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यवाहक निदेशक श्री निर्मल गोराना के साथ मिलकर ब्रार ग्राम उद्योग समिति सस.एम.ईट भट्टें पर छापा मारा. छापे के दौरान बेगार से जूझते बंधुआ मजदूरों ने अपने दर्द का बयान किया. मालिक सुरेन्द्र कुमार ईंट भट्टा छोड़ कर फरार हो गया. मुक्ति के समय अंत में उप खंड अधिकारी निधि कल्होत्रा मौके पर पहुंची और निर्मल गोराना को कोसने लगी कि वो मुक्ति प्रमाण पत्र के बिना मजदूरों को इंट भट्टों से ले जाये. अंत में उप खंड अधिकारी निधि कल्होत्रा को मुक्ति प्रमाण पत्र जारी करने ही पड़ी और फिर मजदूरों को बिना इंटरिफ रिलिफ राशि दिये रात्रि ११ बजे निर्मल गोराना के साथ रवाना कर दिया. बघापुराना प्रशासन ने अपनी मूर्खता का परिचय उस समय दिया जब सभी मुक्त बंधुआ मजदूरों को माल ढोने वाले ट्रक में चढ़ाकर दिल्ली भेजा जा रहा था. जब दिल्ली में ट्रक के प्रवेश की समस्या आई तो ट्रक को हरिद्वार ले जाया गया जहां सीटी मजिस्ट्रेट परिसर में ही सामाजिक कार्यकर्ता डॉ.नवनीत भाई की मदद से प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया. प्रेसवार्ता के माध्यम से हरिद्वार में हुई मानव तस्करी के मामले को प्रकाश में लाया गया और हरिद्वार के जिलाधिकारी से मुक्त बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास की मुहार लगाई गई. दिनांक २२ जून, २०१४ को ईंट भट्टा मालिक की ओर से सभी मजदूरों को लगभग एक लाख रू. की मजदूरी का भुगतान करवाया गया और संगठन ने मुक्त कराये गए बंधुआ मजदूरों को इंटरिफ रिलिफ राशि दिलाने हेतु राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में शिकायत की.

निर्मल गाराना - कार्यवाहक
निदेशक बंधुआ मुक्ति मोर्चा

कोई बोलता क्यों नहीं

- प्रज्ञा दया पवार

यह धुआँ-धुआँ सी स्याही
और तीव्र गन्ध ?
ज़रूर किसी ने
कुछ जलाया होगा....

यह कहासुनी
और यह खुसुर-फुसुर ?
ज़रूर किसी ने
बुक्का-फक्का विलाप किया होगा....

वर्दी की चहल-पहल
और भीड़ की तितर-बितर?
ज़रूर किसी ने
किसी का सफ़ाया किया होगा....

कोई बताता क्यों नहीं
कि यहाँ
भला कहाँ थी बस्ती !
यक़ीनन
करुणा
आतंक की ज़द में है....

कवि -'संदर्भ' ४८/१, ब्लॉक नं.६
गेट नं. : ५४/२ अ,
शिवा अपार्टमेंट जवल, शिव कॉलोनी
जलगाँव - ४२५००२
मो. ०९८५०११७५३९

अनु. : प्रकाश भातंब्रेकर
१२, न्यूरोज विला, गोरेवाड़ी
पं.सातवलेकर मार्ग, माहिम
मुम्बई - ४०००१६
मो. ०९३२४४०९४९०

(ज्ञानोदय से साभार)

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं मुक्त अभिव्यक्ति
कला, कौशल-विकास व राष्ट्रीय एकात्मता के लिए

अतुल एवं राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती आंतर्राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव, अतुल (गुजरात)

में

दि. १३ नवम्बर से १७ नवम्बर २०१४

८ वर्ष से १२ वर्ष की आयु मर्यादा

१५ अगस्त १४ तक पंजीकरण करें

परिवार निवास
''जो बच्चों का करेगा मनोरंजन, जुडेंगे उसके नाते प्रभु से''
- साने गुरुजी

गुजरात के **बलसाड** जिले में ग्राम **अतुल** में
अतुल न्यास के अत्यंत रमणीय व सुनियोजित
परिसर में स्थित 'अतुल विद्यालय' में आयोजित

बाल महोत्सव

संपर्क

डॉ.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक, राष्ट्रीय युवा योजना
२२१, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - ११०००१,
दूरध्वनि - ०११२३२२२३२९
भ्रमण ध्वनि - ०९८१०३५०४०४
ई-मेल - nypindia@gmail.com

ले.क.ए.शेखर
प्राचार्य, अतुल विद्यालय,
अतुल ३९६०२० (गुजरात)
दूरध्वनि - ०२६३२-२३३७१७
भ्रमण ध्वनि - ०९८२४२५५४८०
ई-मेल al_sekaras@yahoo.com